अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 परिचय

2.2 साहित्य पुनरावलोकन से लाभ

2.3 शोध कार्य

अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 परिचय :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पद है। किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य उस नींव के समान होता है। जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है।

समस्या से संबंधित कार्य का पुनरावलोकन अनुसंधान आधार तथा गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान हो या चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या इसमें साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य तथा प्रारंभिक चरण है। क्षेत्रीय अध्ययनों में जहां उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है– समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

2.2 साहित्य पुनरावलोकन के लाभ :–

1. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधान कर्ताओ द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता हैं
2. पूर्व साहित्य पूनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध मे अतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
3. पूर्व अनुसंधानो के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओ का पता लगता है।

4. ज्ञान के क्षैत्र में विस्तार के लिऐ आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता का अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है।

5. सत्यापन करने के लिऐ कुछ अनुसंधानो को नवीन दशाओ में करने की आवश्यकता होती है।

इसी प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.3 शोधकार्य :–

इस अध्याय में समस्या से संबधित शोंध कार्य प्रस्तुत किये है:–

1. **एडलर** (1939) के अनुसार प्रथम जन्मक्रम के बच्चों में असुरक्षा का भाव अधिक होता है। असुरक्षा के भाव से बच्चों में व्यक्तिगत तथा सामाजिक समायोजन की समस्याएँ उपलब्ध हो जाती है। अंतिम जन्मक्रम वाले बच्चों की अपने बड़े भाई–बहनों से अपेक्षा उपलब्धियाँ अधिक होती है।

2. **परमेश्वरन्** (1957) ने किशोरों और वयस्कों की तुलना विभिन्न व्यक्तित्व परिवत्यों पर की। इस अध्ययन में यह देखा गया कि विभिन्न क्षेत्रों जैसें दूसरों पर परावंलबन वर्चस्व, Submission, sibling relationship and heterosexual relationship में किशोरों की अपेक्षा वयस्क अधिक समायोजित होते हैं।

3. **नारायना राव** (1967) ने एक अध्ययन में समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में राव ने यह देखा कि समायोजन संबंधी समस्याएँ निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से अधिक संबंधित होती है।

4. **वेलर (1964)** – के अध्ययन के अनुसार प्रथम जन्मक्रम अधिक निर्भर तथा सामाजिक समरूपता दिखाने वाले होते हैं, तनावग्रस्त परिस्थिति में अधिक संबंध की प्रवृत्ति दिखाने वाले, सामाजिक दबाव में अधिक आने वाले तथा अधिक अंतमुर्खो एवं गैर–मिलनसार प्रवृत्ति दिखाने वाले, कुंठा को बर्दास्त नहीं करने वाले होते हैं।

5. **हेल्यन (1968)** – के अध्ययनों के अनुसार प्रथम जन्मक्रम वाले बच्चों की उपलब्धि बाद में जन्में बच्चों की अपेक्षा अधिक होती है। ऐसे बच्चों पर माता–पिता का ध्यान, निदेश तथा उत्तम उपलब्धि आदि के लिये दबाव अधिक होता है। जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे बच्चों में गंभीरता, उत्तरदायित्व का भाव, मजबूत सांवेगिक संबंध, पारिवारिक निष्ठा, रूढ़िवाद, कर्तव्यनिष्ठता जैसे शीलगुणों का विकास होता है इन सभी के कारण प्रथम जन्मक्रम वाले बच्चों की उपलब्धि ऊँची होती है।

6. **आर. डी पाठक (1972)**– ने अपने एक अध्ययन में देखा कि एकाकी जीवन व्यतीत करने वाले बालकों का समायोजन सामान्य लोगों की अपेक्षा बहुत भिन्न होता है।

7. **एम.वॉय. रेड्डी (1971)**– ने अपने एक अध्ययन के द्वारा यह देखा कि दुर्बल आत्म प्रतिमा, हीनता की भावना, परिवार के प्रति अरूचि आदि कुछ ऐसे कारक है जो किशोरों के समायोजन को महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित करते हैं।

8. **देसाई एच.जी.** (1974)– जन्मक्रम व लिंग का बुद्धिमत्ता पर प्रभाव के अध्ययन में यह पाया की तीसरें जन्मक्रम के बालक की

शाब्दिक बुद्धिमता प्रथम व द्वितीय क्रम के जन्मक्रम बालक की अपेक्षा उच्चतम है। चौथे, पांचवे व छटवें जन्मक्रम बालकों की शाब्दिक बुद्धिमत्ता प्रथम जन्मक्रम के बालकों की अपेक्षा कम दिखायी देती है। तीसरे जन्मक्रम के बालकों की अशाब्दिक बुद्धिमत्ता उच्चतम रही है। सभी जन्मक्रमों में जन्म लेने वाली लड़कियों में अशाब्दिक बुद्धिमत्ता समान देखी गयी है। लड़कों में 1 से 7 जन्मक्रम में शाब्दिक बुद्धिमत्ता समान रहती है। प्रथम जन्मक्रम लड़कियों की शाब्दिक बुद्धिमता 3,4,5 जन्मक्रम की अपेक्षा उच्चतम रही है। प्रथम जन्मक्रम की लड़कियाँ सभी जन्मक्रम के लड़कों से शाब्दिक बुद्धिमत्ता में ज्यादा है।

9. **डी.एन. श्रीवास्तव** (1975)– ने शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन संबंधी अध्ययन में ट्राईवैरिएट एनालिसिस के आधार पर यह देखा कि इन्टरमीडिएट और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों में यह चर एक–दूसरें से घनिष्ट रूप से संबंधित है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि उच्च समायोजन उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सहायक है।

10. **हरलॉक**(1975)– - के अध्ययन में यदि स्कूल का वातावरण आवश्यकताओं की पूर्ति होने वाला हो तो छात्रों का समायोजन अच्छा रहता है। और उपलब्धि भी आवश्यकताओं की पूर्ति न होने वाले वातावरण स्कूल की अपेक्षा ज्यादा होती है।

स्कूल या कॉलेज के अनुपयुक्त सांवेगिक परिस्थिति से छात्रों में चिंता एवं घबराट उत्पन्न होती है और उनकी शैक्षिक निष्पादन कम दिखाई देता है।

11. **सिमोण्डम** (1975) – के अध्ययन में यह पाया की जिस बच्चों के शैक्षिक उच्च अंक माता-पिता की मनोवृत्ति बच्चों के प्रति अनुकूल होती है। उनका घरेलू समायोजन उत्तम होता है।

12. **मुरलीधरण बैनर्जी** (1976) – के द्वारा यह स्पष्ट हुआ कि कक्षा में जिन विद्यार्थियों की उपस्थिति जितनी ही अधिक होती है। उनका समायोजन उतना ही अच्छा होता है। ऐसें बालकों का विद्यालयी समायोजन अच्छा होता है।

13. **डी.एन. श्रीवास्तव** (1977) – ने एक अध्ययन में यह स्थिर किया कि उच्च चिन्ता युक्त प्रयोज्यों का समायोजन सभी क्षेत्रों में दुर्बल होता है। दूसरी और जिन प्रयोज्यों में चिन्ता भी मात्रा कम थी उन प्रयोज्यों का समायोजन सभी क्षेत्रों में बेहतर था। इस अध्ययन में यह भी देखा गया कि धूम्रपान करने वाले प्रयोज्यों का समायोजन अन्य सामान्य प्रयोज्यों की अपेक्षा दुर्बल होता है। यह अध्ययन किशोर प्रयोज्यों पर किया गया था।

14. **गिलफोर्ड तथा कूपर** (1979)– ने एक अनुदैर्ध्य अध्ययन (Logitudinal study) में यह पाया कि बच्चों के जिन समूह में स्कूली वातावरण के साथ संतोषजनक समायोजन था, उनमें उन बच्चों की तुलना में जिनमें स्कूली वातावरण के साथ घटिया समायोजन था आत्म-विश्वास तथा आत्म-सम्मान की भावना अधिक मजबूत थी।

15. **सुनिता पी.** (1986)– के अध्ययन में लड़कियाँ घर में लडकों की अपेक्षा अधिक समायोजित है। लड़के संवेगात्मक रूप से लड़कियों से अधिक समायोजित है।